8

समकालीन कविता (आज की कविता)
(राजेश जोशी तथा नरेश सक्सेना)

पिछले पाठ में आपने साठोत्तरी कविता के बारे में पढ़ा। आज कविता–लेखन की परंपरा अनेक रूपों में विद्यमान है। आज की कविता के केंद्र में आम लोगों के जीवन की अभिव्यक्ति है। किसान, मजदूर और वंचित समूह आदि ने कविता में नायकत्व पाया है अर्थात् कविता में अंतिम आदमी की चिंता है। साथ ही परिवेशगत यथार्थ की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। एक ओर निराशा, अवसाद और मूल्यहीनता की कविता है, तो दूसरी ओर नई दिशा और दृष्टि का अवलोकन भी है। जनसामान्य के भीतर आत्मविश्वास का भाव प्रकट हुआ है। राजनीतिक संदर्भ पर आधारित कविताओं की संख्या आज बढ़ी है। साथ ही स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श, दिव्यांग–विमर्श आदि का प्रचलन कविता में बढ़ा है। भाषा और शिल्प के स्तर पर भी अनेक नए प्रयोग हो रहे हैं; जैसे– सपाटबयानी, नए दृश्य बिंब विधान, नए मुहावरे, नवगीत आदि।

आइए इस पाठ में समकालीन कविता के दो प्रमुख कवियों राजेश जोशी और नरेश सक्सेना की कविताएँ पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- परिवार और समाज के संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे;
- संयुक्त परिवार के टूटने के कारण सामाजिक संबंधों में आए बदलावों का उल्लेख कर सकेंगे;
- संयुक्त परिवार के गुणों और एकल परिवार के अवगुणों का वर्णन कर सकेंगे;
- कविता के भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य को प्रस्तुत कर सकेंगे।

- 'संयुक्त परिवार' एवं 'नक्शे' कविताओं का भाव-सौंदर्य प्रस्तुत कर सकेंगे;
- पर्यावरण तथा वर्तमान वैश्विक एवं सामाजिक बदलावों को अभिव्यक्त कर सकेंगे;
- 'संयुक्त परिवार' तथा 'नक्शे' कविता की भाषा संरचना एवं शिल्प-सौंदर्य का विश्लेषण कर सकेंगे;
- हिंदी कविता की परंपरा के साथ-साथ आधुनिक कविता के नए रूपों का वर्णन कर सकेंगे;

8.1 मूल पाठ

राजेश जोशी

(क) संयुक्त परिवार

मेरे आने से पहले ही कोई लौट कर चला गया है
घर के ताले में उसकी पर्ची खुसी है

आया होगा न जाने किस काम से वह
न जाने कितनी बातें रही होंगी मुझसे कहने को
चली गई हैं सारी बातें भी लौट कर उसी के साथ
रास्ते में हो सकता है कहीं उसने पानी तक न पिया हो
सोचा होगा शायद उसने कि यहीं मेरे साथ पिएगा चाय
कैसा लगता है इस तरह किसी का घर से लौट जाना

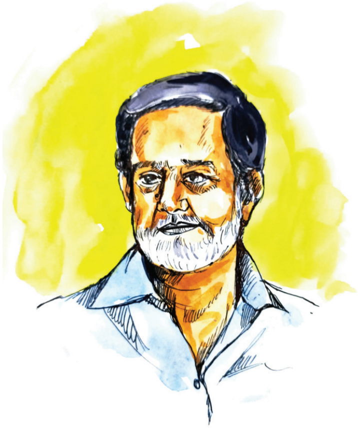

चित्र 8.1 : राजेश जोशी

इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा
बचपन के उस पैतृक घर से
वहाँ बाबा थे, दादी थीं, माँ और पिता थे
लड़ते-झगड़ते भी साथ-साथ रहते थे सारे भाई-बहन
कोई न कोई हर वक़्त बना ही रहता था घर में
पल दो पल को बिठा ही लिया जाता था हर आने वाले को
पूछ लिया जाता था गुड़ और पानी को
खबर मिल जाती थी बाहर गए आदमी की
ताला देखकर शायद ही कभी कोई लौटा होगा घर से

टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ
अब इस घर में रहते हैं ईन मीन तीन जन
निकलना हो कहीं तो सब निकलते हैं एक साथ
घर सूना छोड़कर
यह छोटा सा एकल परिवार
कोई एक बाहर चला जाए तो दूसरों को
काटने को दौड़ता है घर

नए चलन ने बहुत सहूलियत बख़्शी है
चोरों को

कम हो रहा है मिलना-जुलना
कम हो रही है लोगों की जान-पहचान
सुख-दु:ख में भी पहले की तरह इकट्ठे नहीं होते लोग
तार से आ जाती है बधाई और शोक सन्देश
बाबा को जानता था सारा शहर
पिता को भी चार मोहल्ले के लोग जानते थे
मुझे नहीं जानता मेरा पड़ोसी मेरे नाम से
अब सिर्फ़ एलबम में रहते हैं
परिवार के सारे लोग एकसाथ
टूटने की इस प्रक्रिया में क्या-क्या टूटा है
कोई नहीं सोचता

कोई ताला देखकर मेरे घर से लौट गया है !

बोध प्रश्न 8.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. संयुक्त परिवार किसे कहते हैं ?
   (क) जिसमें माता पिता और उनके बच्चे रहते हैं
   (ख) जिस परिवार में पाँच या उससे कम लोग रहते हैं
   (ग) जिस परिवार में पिता की ओर के सभी सगे-सम्बन्धी रहते हैं
   (घ) जिस परिवार में माता और पिता दोनों के सगे-सम्बन्धी रहते हैं।
2. संयुक्त परिवार के टूटने का क्या कारण है ?
   (क) बाज़ारीकरण
   (ख) पश्चिमी संस्कृति
   (ग) व्यक्तिवाद और पूंजीवाद
   (घ) उपरोक्त सभी
3. 'ईन मीन तीन जन' से कवि का क्या अभिप्राय है ?
   (क) यह तीन नाम हैं
   (ख) यह कवि के सगे-सम्बन्धी हैं
   (ग) इसका आशय एक, दो, तीन की संख्या से है
   (घ) इसका आशय विशिष्ट लोगों से है

8.2 आइए समझें

परिवार को सामाजिकता की पहली इकाई माना जाता है। एक संस्था के रूप में परिवार की रचना मानव-सभ्यता के इतिहास में बहुत पहले हुई होगी। परिवार ही हमारी पहली पाठशाला मानी जाती है। हम बहुत कुछ परिवार में ही सीखते हैं। एक संस्था के रूप में आज परिवार का आकार और उसकी स्थिति बदलती जा रही है। आधुनिक रहन-सहन, जीवन-शैली और बदलते मूल्यों के कारण संयुक्त परिवार टूटकर अब एकल परिवार में बदल रहे हैं। जिसके कारण सामाजिक संबंध भी बिखरने लगे हैं। बाज़ार का इसमें बहुत बड़ा हाथ है। आइए इस टूटते-बिखरते इन सामाजिक संबंधों को आधार बनाकर लिखी गई राजेश जोशी की कविता 'संयुक्त परिवार' पढ़ते हैं –

अंश - 1

मेरे आने से पहले .... घर से लौट जाना।

व्याख्या : कविता की शुरुआत किसी व्यक्ति के दरवाजे पर ताला लगा देखकर लौट जाने से हुई है। कवि बताता है कि दरवाज़े में ताला लगा देखकर किसी आगंतुक ने ताले में एक पर्ची लगा दी है। सम्भव है पर्ची में उस व्यक्ति ने अपना नाम, पता और आने का कारण लिखा हो। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है।

आप जानते हैं कि एकल परिवार (अर्थात वह परिवार जिसमें सिर्फ़ माता-पिता और उनके बच्चे होते हों) के सभी सदस्य घर से बाहर होते हैं, तो दरवाजे पर ताला लग जाता है किंतु संयुक्त परिवार (वह परिवार जिसमें दादा-दादी, चाचा-चाची सहित चचेरे भाई-बहन आदि होते हों) वाले घर में ताला लगाने की ज़रूरत कभी नहीं होती, क्योंकि कोई-न-कोई सदस्य घर में हमेशा रहता है। एकल परिवार के सदस्य अपने-अपने कार्यों से घर से बाहर जाते रहते हैं इसलिए उन्हें घर के दरवाज़े पर ताला लगाना पड़ता है। कवि इस बात से चिंतित है कि मिलने के लिए आने वाला व्यक्ति मिले बिना लौटकर चला गया है। उसकी चिंता का विषय यह भी है कि वह व्यक्ति जाने किस काम से आया होगा ? उसके पास बहुत-सी बातें रही होंगी कहने के लिए, लेकिन बिना कहे ही वह लौट गया होगा। कवि उसके लौट जाने से व्यथित है। वह उसके

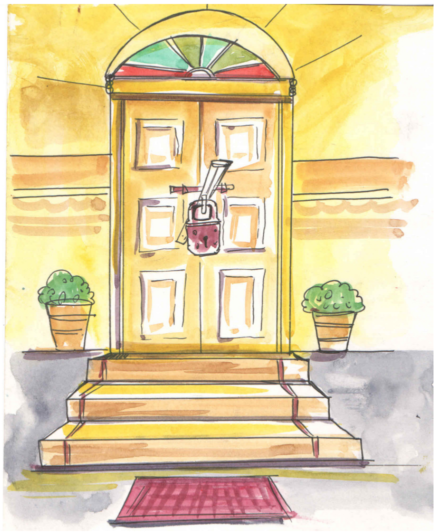

चित्र 8.2 : दरवाजे पर ताला

टिप्पणी

मेरे आने से पहले ही कोई लौटकर
चला गया है
घर के ताले में उसकी पर्ची खुसी
है

आया होगा न जाने किस काम से
वह
न जाने कितनी बातें रही होंगी
मुझसे कहने को
चली गई हैं सारी बातें भी लौटकर
उसी के साथ
रास्ते में हो सकता है कहीं उसने
पानी तक न पिया हो
सोचा होगा शायद उसने कि यहाँ
मेरे साथ पिएगा चाय
कैसा लगता है इस तरह किसी का
घर से लौट जाना

प्यासे होने के बारे में भी सोचता है और यह भी सोचता है कि शायद वह मेरे साथ चाय पीने की इच्छा से भी आया हो। घर के ताले में पर्ची का लगा होना व्यक्ति का समाज से संवाद के टूट जाने की त्रासदी को दिखाता है।

ताले में पर्ची लगी देखकर कवि बेचैन और चिंतित है कि न जाने वह आगंतुक किस काम से आया होगा! शायद कुछ कहना चाह रहा होगा! अगर वह कहीं दूर से आया होगा तो उसने पानी तक नहीं पिया होगा। कवि को इसका भी पछतावा है कि वे सारी सूचनाएँ जो उसे आगंतुक से मिलतीं, उससे वह वंचित रह गया है। आपने यह देखा होगा कि चाय पीते हुए लोग अपने सुख-दु:ख की बातें किया करते हैं। यहाँ कवि को इस बात का दु:ख है कि वह आगंतुक जो लौट गया शायद मेरे साथ बैठकर चाय पीना चाहता होगा।

पाठगत प्रश्न 8.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'ताला' किसका प्रतीक है ?

   (क) घर बंद होने का

   (ख) घर में किसी के न होने का

   (ग) घर की सुरक्षा का

   (घ) किसी से बात नहीं होने का

2. कवि को किस बात का पछतावा है ?

   (क) किसी के लौट जाने का

   (ख) घर में ताला लगाने का

   (ग) ताले में खुसी पर्ची का

   (घ) अतिथि से मिलने का

3. चाय की क्या सामाजिक भूमिका है ?

   (क) इसे समाज में लोग मिलकर बनाते हैं।

   (ख) यह लोगों को एक-दूसरे से मिलने का अवसर देता है।

   (ग) चाय की दुकान पर राजनीति की बातें होती हैं।

   (घ) चाय बहुत स्वादिष्ट होती है।

4. किसी का घर से लौट जाना कवि की परेशानी का कारण क्यों है ?

(क) वह कवि की जान-पहचान का था।

(ख) उससे कवि को बहुत ज़रूरी बातें करनी थी।

(ग) कवि के घर से अब तक कोई अतिथि बिना मिले नहीं लौटा था।

(घ) क्योंकि कवि को हर बात से परेशान होने की आदत है।

अंश - 2

इस तरह कभी कोई .... दौड़ता है घर।

व्याख्या : हमारी परम्परा में 'अतिथि देवो भव' के आदर्श का पालन होता रहा है। हमारे यहाँ वैदिक युग से ही अतिथि को देवता के समान माना जाता रहा है। कवि को इस बात का बहुत दु:ख है कि उसके पैतृक घर से कभी कोई इस तरह नहीं लौटा होगा। किसी आगंतुक का लौट जाना कवि के लिए एक कष्टदायक घटना है। उसे याद आते हैं संयुक्त परिवार में रहने वाले दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और भाई-बहन सभी साथ-साथ रहते थे। यहाँ कवि की स्मृति बार-बार अपने पैतृक घर की ओर जाती है।

कविता के इस अंश में कवि उपभोक्तावादी संस्कृति पर आधारित नगरीय जीवन-शैली की तुलना ग्रामीण जीवन-शैली से करता है जहाँ उसके लिए पहले 'घर' का मतलब एक संयुक्त परिवार हुआ करता था। कवि अपने बचपन के उस पैतृक घर को याद करता है जहाँ कभी कोई दरवाज़े से ताला देखकर नहीं लौटा था। आज की नगरीय जीवन शैली में परिवार के जीविकोपार्जन का दायित्व सभी पर है, जिसके कारण प्राय: कार्य दिवसों पर घर में कोई मौजूद नहीं रहता। दरवाज़े पर लगा ताला उसी का सूचक है। कवि के शब्दों में अब इस घर में रहते हैं – 'ईन मीन तीन जन'। अर्थात् बदलती हुई आर्थिक व्यवस्था के दबाव के कारण लोग अपने कस्बों और गाँवों से पलायन करते हुए जब महानगरों की ओर आते हैं तब प्राय: पति-पत्नी और बच्चे ही उस परिवार में रहते हैं। दादा-दादी और दूसरे रिश्तेदार पीछे छूट जाते हैं।

कवि घर के सूनेपन के अहसास से घबराते हैं। खाली घर उसे काटने को दौड़ता है। मनुष्य की सामाजिकता उसके मानसिक स्वस्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी है। वह अकेले नहीं जी सकता।

पाठगत प्रश्न 8.2

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही वाक्यों के आगे सही (√) और ग़लत वाक्यों के आगे ग़लत (×) का निशान लगाइए :

(क) संयुक्त परिवार में अतिथि हमेशा लौट जाया करते हैं।

(ख) संयुक्त परिवार में अतिथि बिना स्वागत के नहीं लौटते हैं।

टिप्पणी

इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा
बचपन के उस पैतृक घर से
वहाँ बाबा थे, दादी थीं, मां और पिता थे
लड़ते-झगड़ते भी साथ-साथ रहते थे सारे भाई-बहन
कोई न कोई हर वक्त बना ही रहता था घर में
पल दो पल को बिठा ही लिया जाता था और हर आने वाले को
पूछ लिया जाता था गुड़ और पानी को
खबर मिल जाती थी बाहर गए आदमी की
ताला देखकर शायद ही कभी कोई लौटा होगा घर से

टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ
अब इस घर में रहते हैं ईन मीन तीन ज न
निकलना हो कहीं तो सब निकलते हैं एक साथ
घर सूना छोड़कर
यह छोटा सा एकल परिवार
कोई एक बाहर चला जाए तो दूसरों को
काटने को दौड़ता है घर

(ग) एकल परिवार में दादा-दादी रहते हैं।

(घ) संयुक्त परिवार में ईन मीन तीन जन ही रहते हैं।

(ङ) एकल परिवार वाला खाली घर काटने को दौड़ता है।

क्रियाकलाप 8.1

अबतक आप यह जान चुके हैं कि हमारे समाज में पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे जिनके टूटने से अब एकल परिवार बनने लगे हैं। हमारी परम्परा में संयुक्त परिवार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आप अपने आस-पास के बड़े बुजुर्गों से बात करें और उनसे यह जानने का प्रयास करें कि संयुक्त परिवार कैसा होता था ? उसके क्या फायदे थे ? एकल परिवार के बनने से हमारे सामाजिक संबंधों में किस प्रकार के बदलाव आए हैं। अपने अनुभव को लिखिए।

अंश - 3

नए चलन ने बहुत सहूलियत बख्शी है
चोरों को
कम हो रहा है मिलना-जुलना
कम हो रही है लोगों की जान पहचान
सुख-दु:ख में भी पहले की तरह
इकट्‌ठे नहीं होते लोग
तार से आ जाती है बधाई और शोक-सन्देश

बाबा को जानता था सारा शहर
पिता को भी चार मोहल्ले के लोग जानते थे
मुझे नहीं जानता मेरा पड़ोसी मेरे नाम से
अब सिर्फ एलबम में रहते हैं
परिवार के सारे लोग एक साथ
टूटने की इस प्रक्रिया में क्या- क्या टूटा है
कोई नहीं सोचता

कोई ताला देखकर मेरे घर से लौट गया है !

नए चलन ने .... लौट गया है।

व्याख्या : कवि यहाँ उस समय को याद कर रहा है जब लोग एक दूसरे के सुख-दु:ख में शामिल रहते थे। इसके विपरीत आज एकल परिवार में सभी लोग जीवन की अपनी-अपनी जरूरतों में उलझे हैं। ऐसी जीवन शैली के कारण एक ओर लोगों के पास एक-दूसरे के लिए समय नहीं है तो दूसरी ओर चोरों को सुनहरा अवसर मिल जाता है। घरों में लगे इन तालों ने लोगों को अपने आस-पड़ोस से काट दिया है। लोग न तो एक साथ मिलकर खुशियाँ मना पाते हैं न ही दु:ख के समय एक दूसरे के काम आ पाते हैं।

इसकी मुख्य वजह यह है कि न तो लोग अपने नाते-रिश्तेदारों के साथ रहते हैं और न पड़ोसियों से मित्रता कायम करने की अब फुर्सत है। लोग मोबाइल आदि माध्यमों के जरिए बधाई और शोक के संदेश भेजकर औपचारिकता पूरी कर लेते हैं।

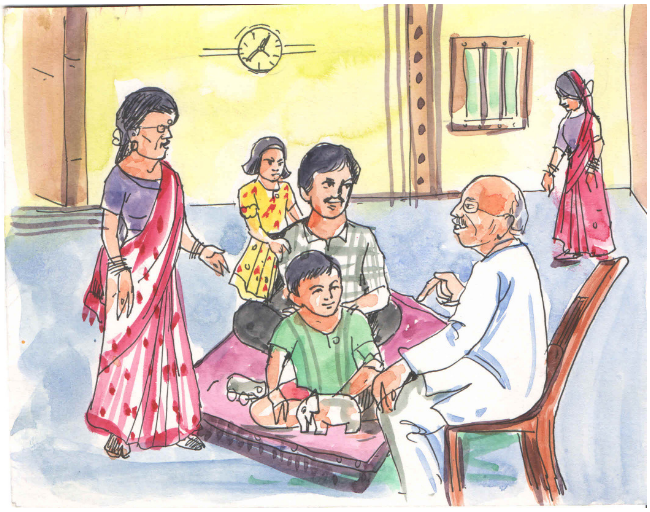

चित्र 8.3 : संयुक्त परिवार

कवि को परिवार 'टूटने' का अहसास बार-बार सताता है। संयुक्त परिवार के टूटने से अनेक स्तरों पर मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ये मूल्य ही

परम्परा, संस्कृति और मर्यादा के नाम से जाने जाते हैं।

उन्हें इस बात की शिकायत भी है कि उपभोक्तावाद, पूँजीवाद और व्यक्तिवाद ने हमारी मूल्य व्यवस्था को बेहद क्षति पहुँचाई है। कवि संयुक्त परिवार के टूटने और एकल परिवार के बनने की प्रक्रिया में पूर्वजों और अपनी पीढ़ी के बीच के अंतर पर ध्यान दिलाते हैं। जहां उनके बाबा को सारा शहर जनता था, वहीं उनके पिता की पीढ़ी से 'अजनबीपन' का यह दौर शुरू हो गया। लेकिन तब भी उनके पिता को चार मुहल्लों के लोग जानते थे। लेकिन कवि की पीढ़ी में उसके पड़ोसी तक उनका नाम नहीं जानते। द्वार पर आया हुआ अतिथि दरवाज़े का ताला देखकर कवि के घर से लौट गया है। यह ताला आज नगरों में रहने वाले व्यक्तियों के सामाजिक अलगाव को इंगित करता है।

क्रियाकलाप 8.2

अपने परिवार के बड़े-बुजुर्गों से यह पूछें कि आपके परिवार में पहले कितने लोग साथ रहते थे? आपके परिवार की संरचना में किस तरह के बदलाव आए हैं, इस बारे में उनसे चर्चा कीजिए और संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

पाठगत प्रश्न 8.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. चोरों को सहूलियत होने से लेखक का क्या तात्पर्य है –

   (क) घर में ताले लगने लगे हैं।

   (ख) चोरों की संख्या बहुत बढ़ गयी है।

   (ग) घर में बहुत सारे लोग रहने लगे हैं।

   (घ) घर में लोग हमेशा नहीं रहते हैं।

2. कवि के अनुसार हमारे परिवार और समाज में क्या बदलाव आ रहा है।

   (क) आज नाते–रिश्तेदार साथ रहते हैं।

   (ख) मित्रता कायम रखने की फुर्सत नहीं।

   (ग) आज संयुक्त परिवार का विस्तार हुआ है।

   (घ) लोग अवसर विशेष पर ही एकत्रित होते हैं।

8.3 भाषा तथा शिल्प-सौन्दर्य

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। इसी के माध्यम से कवि अपनी अनुभूतियों एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है। कविता रागात्मक, लाक्षणिक, प्रतीकात्मक एवं आलंकारिक होती है। कविता की भाषा सामान्य भाषा की तुलना में स्वच्छंद, लचीली, जीवन्त, प्रभावी और संप्रेषणीय होती है। आधुनिक कवियों का बल भाषा के संप्रेषण को प्रभावी बनाने पर होता है। आइए, देखते हैं कि 'संयुक्त परिवार' कविता भाषा की दृष्टि से दूसरी कविताओं से किस तरह अलग है ?

आधुनिक कविताओं में कवि का जोर परंपरागत रस, छन्द, अलंकार के नियमों पर नहीं रहता है। आधुनिक कविता की भाषा आम बोलचाल की भाषा है। यह वह भाषा है जिसमें आम जनता सोचती है, बोलती है और अपनी भावनाएँ संप्रेषित करती है। यह कविता को पढ़ते हुए आपको लगा होगा कि कवि अपनी आप बीती सुना रहा है। भाषा की सहजता इस कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है। जब कवि एकल परिवार के सदस्यों को 'ईन मीन तीन जन' कहते हैं तब उनकी भाषा की सहजता बोली की मिठास तक पहुँच जाती है।

भाषा की सहजता आधुनिक कविता की विशेषता है। इसका कारण यह है कि आधुनिक कवि संप्रेषण को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। परंतु यह आधुनिक कवि के लिए एक चुनौती भी है। माना जाता है कि लेखन में कभी भी शब्दों और उसमें निहित भावों को उस रूप में उतारना सम्भव नहीं होता, जैसा हम बातचीत के दौरान कर पाते हैं।

'संयुक्त परिवार' कविता में राजेश जोशी भाषा और शिल्प की इस चुनौती पर खरे उतरे हैं। इस कविता में 'ताला' न सिर्फ़ घर के दरवाजे पर लगा है अपितु सामाजिक संबंधों के ऊपर भी। कविता का आरंभ ही ताले में खुसी पर्ची से होता है। पर्ची कोई चाभी नहीं है जो ताले को खोल सके। लेकिन कवि ने इसके माध्यम से जिन सवालों को उठाया है, वह सभ्यता के सवाल हैं। इन दृश्यों की बुनावट के लिए इस्तेमाल भाषा इतनी सहज और सरल है कि हर पाठक जुड़ाव महसूस करता है। जिन्हें हमारे जीवन में इतना दोहराया जाता है कि वे आम व्यक्ति के लिए मुहावरे बन गए हैं।

(ख) नरेश सक्सेना (नक्शे)

अब तक आप आदिकाल, मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के कई कवियों की कविताएँ पढ़ चुके हैं। मैथिली, ब्रज एवं अवधी भाषा की कविताओं की यात्रा करते हुए आप खड़ी बोली हिंदी के तट पर विश्राम कर रहे हैं। खड़ी बोली हिंदी का सीधा संबंध आधुनिक काल की कविताओं एवं कवियों से है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रारंभ अगर 1850 ई. से मानें तो आधुनिक काल का दायरा

चित्र 8.4 : नरेश सक्सेना

लगभग 150 वर्षों का ठहरता है। 150 वर्षों के इस विस्तृत काल-खंड में भी हिन्दी कविता भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता जैसे काव्य-आंदोलनों से गुजरते हुए आज यहाँ तक पहुँची है। नरेश सक्सेना आधुनिक काल के भी सबसे आधुनिक (समय के संदर्भ में) कवियों में से एक है। पिछले 50-60 वर्षों से हिन्दी कविता-लेखन के क्षेत्र में वह सक्रिय हैं। अत: उनको पढ़ना और जानना आधुनिक समय और समाज के बदलावों को जानना है। नरेश सक्सेना की कविताएँ प्राकृतिक सौंदर्य के विविध रूपों, इंजीनयरिंग पेशे के अनुभवों एवं मानवीयता के प्रति अपार प्रेम से भरी हुई हैं। वैश्वीकरण के पश्चात (भारत के संदर्भ में 1990 के बाद) बदली हुई विश्व-व्यवस्था, बाज़ारवाद के प्रति प्रतिरोध की भावना एवं पर्यावरण की चिंता भी नरेश जी की कविताओं में दिखाई पड़ती हैं। 'नक्शे' कविता पढ़ते हुए आप इन बातों को और भी गहराई से समझ पाएँगे। तो आइए, पढ़ते हैं कविता के मूल पाठ को।

क्रियाकलाप 8.3

अब तक के अपने जीवन में आपने तरह-तरह के नक्शे देखे होंगे। जैसे- ज़मीन का नक्शा, विद्यालय का नक्शा, शहर, राज्य, राष्ट्र एवं विश्व का नक्शा। मकान एवं आवासीय परिसरों के प्रचार-प्रसार का नक्शा तो आपने अखबारों में विज्ञापन के तौर पर देखा ही होगा। इन नक्शों की चार विशेषताओं को लिखिए–

(1) ....(2)..

(3) ....(4)..

आपने देखा होगा कि हर नक्शे का एक पैमाना होता है जिसका उल्लेख अधिकांशत: नक्शा बनाने वाले नक्शे के नीचे कर दिया करते हैं। नक्शे का आकार इसी से तय होता है। किसी भी 'एटलस' (मानचित्र) में राजनैतिक एवं भौगोलिक मानचित्र को ध्यान से देखें तथा उसके 'पैमाने' एवं आकार के बारे में जानकारी प्राप्त करें। समझने की कोशिश करें कि मानचित्र में क्यों 'कोई राज्य, देश, पहाड़, नदी, समुद्र आदि छोटे और बड़े दिखते हैं'?

8.4 मूल पाठ

आइए। अब कविता से रू-बरू होते हैं। किसी भी कविता को समझने का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है- उसका उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ/वाचन। तो सबसे पहले उचित आरोह-अवरोह के साथ 'नक्शे' कविता को पढ़ते-सुनते हैं–

नक्शे

नक्शे में जंगल हैं पेड़ नहीं
नक्शे में नदियाँ हैं पानी नहीं
नक्शे में पहाड़ हैं पत्थर नहीं

टिप्पणी

नक्शे में देश है लोग नहीं
समझ ही गये होंगे आप कि हम सब
एक नक्शे में रहते हैं

हमारी पैंटों और चप्पलों से लेकर
वल्दियत और चोटों के निशान
नब्ज़ रक्तचाप और तापमान
स्वप्न और स्मृतियों सहित नप चुके हैं
और नक्शे तैयार हैं

नक्शों में नदियाँ अब भी कितनी
साफ़ हैं और चमकदार
कहती हुई
'हमें तो अब यहीं अच्छा लगता है'

नक्शों में गतियाँ हैं लक्ष्य हैं दिशाएँ हैं
अतीत है भविष्य है और सब तरह के रंग
क्या नहीं है
बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी तक
नक्शे में जा चुकी है

एक लंबे क्यू में खड़े बदहवास हम पूछते हैं
'भाई साहब,
कहीं हम नक्शों से बाहर तो नहीं छूट जायेंगे'

नक्शों में सबसे ख़तरनाक चीज़ होती है उनका पैमाना
पैमाना घटाते ही
बौने हो जाते हैं पहाड़
समुद्र पोखर हो जाते हैं
शहरों को छोड़िए
छोटे-मोटे देश तक ग़ायब हो जाते हैं
इसमें क़ुसूरवार नक्शे नहीं
आँखे ठहराई जाती हैं

तफ़रीह की जगह नहीं है यह
नक्शों से फ़ौरन बाहर निकल आइए
मुझे लगता है एक दिन
सारे नक्शों को मोड़कर जेब में रख लेगा कोई मसख़रा
और चलता बनेगा।

शब्दार्थ

वल्दियत – पिता का नाम
नब्ज – नाड़ी
स्मृति – यादाश्त
नप चुकना/चुके– किसी घेरे में आना, खत्म होना
रक्तचाप – रक्त का दबाव (ब्लड प्रेशर)
लक्ष्य – उद्देश्य, मंजिल
बदहवास – परेशान, हैरान
पैमाना – मापने का आधार
पोखर – तालाब
कुसूरवार – ग़लती करने वाला
तफ़रीह – मन-बहलाव हेतु इधर-उधर घूमना-फिरना
फ़ौरन – तुरंत, तत्काल
मसखरा – विदूषक, परिहास करनेवाला

क्रियाकलाप 8.4

(1) 'नक्शा' शब्द के लिए अपनी मातृभाषा से शब्द ढूँढ़कर नीचे लिखिए तथा यह भी सोचकर लिखिए कि कविता का शीर्षक 'नक्शे' (बहुवचन रूप में) क्यों है?

....

....

(2) आमतौर पर किसी भी नक्शे में क्या-क्या चीजें दिखाई जाती है?

....

....

8.5 आइए समझें

अंश-1

प्रसंग : अब तक आप कविता पढ़ चुके हैं। 'नक्शा' देखना एक बात है और नक्शे को मानवीयता और उसकी आवश्यकताओं से जोड़कर समझना दूसरी बात। आइए! अब देखते हैं कि नरेश सक्सेना का 'नक्शा' कैसे अन्य नक्शों से भिन्न है? मानचित्र में रचनाकार रेखाओं के सहारे मानचित्र बनाता है जबकि कवि शब्दों के सहारे ही कविता में नक्शा गढ़ता है। शब्द ही कवि के कूची, रंग और रेखाएँ हैं। नरेश सक्सेना मूल-रूप से बोलचाल की भाषा के कवि हैं। इसलिए उनकी कविताओं में अधिकतर शब्द भी आम बोल-चाल के ही आते हैं।

व्याख्या : नरेश सक्सेना के लिखने और अधिक पढ़े जाने वाले कवि हैं। अब तक उनके दो संग्रह- 'समुद्र पर हो रही है बारिश' एवं 'सुनो चारुशीला' प्रकाशित हो चुके हैं। 'नक्शे' उनके प्रथम संग्रह की आखिरी कविता है। अब तक आप इस कविता को पढ़कर, जानकर और अलग-अलग प्रश्नों का जवाब देकर समझ चुके हैं कि कविता में 'नक्शे' की अवधारणा को भिन्न दृष्टिकोण से देखा गया है। इस दृष्टिकोण के मूल में मानवीयता, बाज़ारीकरण का असर एवं पर्यावरण की चिंता है। मूल रूप से विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के अध्येता होने के कारण नरेश सक्सेना का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी इस भिन्नता का कारण है। दरअसल नरेश सक्सेना का बचपन प्रकृति की उन्मुक्त छाँव में बीता था। उन्होंने प्रकृति का स्वच्छ, निर्मल एवं प्रसन्न रूप देखा-भोगा था। इसीलिए किसी परिजन की तरह कविताओं में नरेश सक्सेना प्रकृति और पर्यावरण की दुरावस्था के प्रति चिंता अभिव्यक्त करते हैं। वस्तु और पदार्थ भी कवि के लिए मानव की तरह ही सजीव हैं। 'नक्शे' कविता में कवि की इन भावनाओं को देखा-परखा जा सकता है।

नक्शे में जंगल हैं पेड़ नहीं
नक्शे में नदियाँ हैं पानी नहीं
नक्शे में पहाड़ हैं पत्थर नहीं
नक्शे में देश है लोग नहीं
समझ ही गये होंगे आप कि हम सब
एक नक्शे में रहते हैं

हमारी पैंटों और चप्पलों से लेकर
वल्दियत और चोटों के निशान
नब्ज़ रक्तचाप और तापमान
स्वप्न और स्मृतियों सहित नप चुके हैं
और नक्शे तैयार हैं

नक्शों में नदियाँ अब भी कितनी
साफ़ हैं और चमकदार
कहती हुई
'हमें तो अब यहीं अच्छा लगता है'

नक्शों में गतियाँ हैं लक्ष्य हैं दिशाएँ हैं
अतीत है भविष्य है और सब तरह के रंग
क्या नहीं है
बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी तक
नक्शे में जा चुकी है

एक लंबे क्यू में खड़े बदहवास हम पूछते हैं
'भाई साहब,
कहीं हम नक्शों से बाहर तो नहीं छूट जायेंगे'

समझ की सुविधा के लिए 'नक्शे' कविता को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम हिस्से में, नक्शे में क्या है और क्या नहीं है–का उल्लेख किया गया है। मध्य की तीन पंक्तियों में एक सामान्य व्यक्ति की जिज्ञासा और बदहवासी अभिव्यक्त की गई है कि–''कहीं हम नक्शों से बाहर तो नहीं छूट जायेंगे।'' और फिर है कविता का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा। आइए, अब हम प्रथम हिस्से के अर्थ-ग्रहण की प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

आप अलग-अलग तरह के नक्शों का मुआयना कर चुके हैं। आपने भारत और उसके सीमावर्ती देशों का नक्शा देखा। अपने राज्य और पड़ोसी राज्यों का नक्शा देखा है। अपनी ज़मीन और मकान का नक्शा देखा है। आजकल तो मकान से लेकर दुकान तक, विद्यालय से लेकर अस्पताल तक, हकीकत से लेकर ख्वाब तक–हर चीज़ का नक्शा आपके समक्ष विज्ञापन दे-देकर प्रस्तुत किया जाता है। इसीलिए कवि किसी एक नक्शा के बारे में बात करने की बजाए नक्शे (बहुवचन रूप) की बात करता है। कवि कहना चाहता है कि जाने-अनजाने आज के समय में हम सब किसी न किसी नक्शे में रहते हैं। अब सवाल यह उठता है कि वह नक्शा है कैसा? ये ऐसे नक्शे हैं जिसमें जंगल तो हैं, पर पेड़ नहीं। नदियाँ हैं, पर पानी नहीं। पहाड़ हैं, पर पत्थर नहीं। और तो और इन नक्शों में देश के देश दिखाई पड़ते हैं, पर लोगों का नामोनिशान नहीं है। मतलब भौगोलिक रूप से तो ये चीज़ें मौजूद हैं, किंतु उनका प्राण-तत्व, उनकी जीवंतता गायब है। नदी का पानी के बिना, पहाड़ का पत्थरों के बिना और देश का लोगों के बिना क्या अस्तित्व है? ज़रा सोचिए!

ऐसे नक्शे अस्तित्व में हैं और लोगों को अपनी ओर अपने रंग-रोगन और योजनाओं से आकर्षित भी कर रहे हैं। बाज़ार में तो ऐसे नक्शों की भरमार है। बस इन नक्शों में मानवीयता एवं संवेदनाएँ जगह नहीं पाती हैं। वैसे भी बाज़ार में पदार्थ और उत्पाद की जगह होती है, संवेदनाओं और मानवीयता की नहीं।

आगे की पंक्तियों में अपनी बात को बढ़ाते हुए कवि कहता है कि हमारे जीवन की छोटी-छोटी चीज़ें भी इन नक्शों की भेंट चढ़ चुकी हैं। पैंट और चप्पल उन छोटी चीज़ों के प्रतीक हैं जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। 'वल्दियत' से इशारा उन चीज़ों के प्रति है जो हमें अपने पुरखों और अपनी परंपरा से मिलता है। चोटों के निशान, हमारी स्मृति और सुख-दुख का हिस्सा हैं, जो नितांत व्यक्तिगत चीज़ें होती हैं। नब्ज, रक्तचाप और तापमान हमारे शरीर के उन हिस्सों की ओर संकेत करते हैं जिन पर सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारा ही अधिकार होना चाहिए, चाहे वह शारीरिक बीमारी के रूप में ही क्यों न हो। परंतु नक्शे के इस ज़माने में कुछ भी हमारा नहीं है। न ही स्वप्न और न ही स्मृति। ये सभी के सभी वस्तु और उत्पाद के रूप में तब्दील होकर किसी-न-किसी नक्शे में समा गए हैं। मतलब कि हम और हमारी चीज़ें खत्म होती जा रही हैं और तरह-तरह के नक्शे तैयार हो रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। प्रकृति का इतना दोहन हो रहा है कि वह अपना मूल रूप खोती जा रही है। दूसरी तरफ़ तरह-तरह के चमकदार नक्शे हमारे सामने प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ऐसी ही स्थिति पर चुटकी लेते हुए कवि लिखता है कि अब तो नदियाँ भी कहने लगी हैं कि उन्हें भी नक्शे में ही रहना अच्छा लगता है, क्योंकि सिर्फ़ नक्शों में ही नदियाँ साफ़ और चमकदार दिखती हैं। इन पंक्तियों में प्रकृति और पर्यावरण की वर्तमान परिस्थितियों पर गहरा व्यंग्य किया

गया है। नदियों के माध्यम से यहाँ कवि की अपनी भावना अभिव्यक्त हुई है और एक तरह का आक्रोश भी। प्रकृति, पर्यावरण और नदियों की दुरावस्था तथा नक्शा प्रस्तुत करने वालों में कोई-न-कोई संबंध तो अवश्य है। कहीं इस दुरावस्था के ज़िम्मेदार वे ही तो नहीं हैं। ज़रा सोचिए और पर्यावरण के प्रति सचेत लोगों से चर्चा कीजिए।

आगे नक्शे की शक्ति का उल्लेख करते हुए कवि लिखता है कि इन नक्शों में कोई कमी नहीं है। जो-जो चीज़ें हमारे जीवन से गायब हो चुकी हैं वे भी यहाँ मौजूद हैं। अतीत और भविष्य के तमाम रंग यहाँ मौजूद हैं। हमारी परंपरा से लेकर अगले कई वर्षों की योजनाएँ लक्ष्य, भविष्य की दशा-दिशा; सब कुछ यहाँ उत्पाद रूप में मौजूद हैं। ऐसी गति और कहाँ दिखेगी जहाँ एक नज़र में आप सैकड़ों वर्ष आगे और पीछे देख सकते हैं। यहाँ तक कि बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी यानी कि हमारा स्वाद तक उत्पाद बन कर नक्शे में समा चुका है। यों भी आजकल गूगल के नक्शे में आपको जगह से लेकर स्वाद तक की सूचना देने वाले सभी ऐप मौजूद हैं और हमारी छोटी से छोटी सूचनाएँ उनके ऐप में दर्ज हैं। हमारी आदतें, हमारी पसंद, हमारी जगहें, क्या नहीं है उनके पास?

नक्शे में क्या है और क्या नहीं है पर इतनी बात कर लेने के बाद एक सामान्य और इस नई व्यवस्था के दुष्प्रभाव से अनजान व्यक्ति के प्रश्न से कविता अपनी भाव-भंगिमा बदलती है। इस व्यवस्था में नक्शे ने ऐसा आकर्षण और आवश्यकता पैदा कर दी है कि हर किसी को नक्शे में शामिल रहना ही श्रेयस्कर लगता है। क्या आप बता सकते हैं कि यहाँ 'हम पूछते हैं' में हम कौन है? हम इस व्यवस्था के शिकार वे तमाम लोग हैं जो किसी भी कीमत पर नक्शे में शामिल हो जाना चाहते हैं जिन्हें वर्तमान और खुद पर भरोसा नहीं है और भविष्य की चिंता से भयभीत हैं। नक्शे से बाहर छूटने की आशंका उनके इसी भय को अभिव्यक्त करती है।

अंश-2

प्रसंग : इसके बाद प्रारंभ होता है कविता का सबसे महत्वपूर्ण और अंतिम हिस्सा। इन पंक्तियों में कवि नक्शे की असलियत और उद्देश्य को उद्घाटित करता है।

व्याख्या : अभी तक कवि नक्शे के स्वरूप और उसकी वर्तमान स्थिति पर तटस्थ भाव से टिप्पणी कर रहा था। परंतु आगे की पंक्तियों में कवि की धारणाएँ और विचार अभिव्यक्त हुए हैं। आपको ध्यान होगा कि कविता में प्रवेश करने से पूर्व आपने नक्शे और पैमाने के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। नक्शे के उस विज्ञान को ध्यान में रखते हुए अब आगे की पंक्तियाँ पढ़िए और अर्थ का अनुमान लगाइए। सोचिए कि पैमाने को सबसे खतरनाक क्यों बताया गया है? अब तक आप जान चुके हैं कि तय किए गए पैमाने के अनुसार ही नक्शे में किसी जगह की लंबाई-चौड़ाई और क्षेत्रफल तय होते हैं। इसीलिए कवि कहता है कि पैमाना घटाते ही पहाड़, शहर, समुद्र तो छोड़िए देश तक नक्शे से गायब हो जाते हैं। यानी नक्शे में कौन रहेगा और कौन नहीं, यह पैमाने से ही तय होता है। उदाहरण के लिए अगर पैमाने में 100 किमी. को एक इकाई मान लिया गया तो नक्शे में 100 किमी. से छोटी जगहें नहीं के बराबर दिखाई पड़ेंगी। और मज़े की बात तो यह है कि इसके लिए दोषी न तो नक्शे को ठहराया जाता है

नक्शों में सबसे ख़तरनाक चीज़ होती
है उनका पैमाना
पैमाना घटाते ही
बौने हो जाते हैं पहाड़
समुद्र पोखर हो जाते हैं
शहरों को छोड़िए
छोटे-मोटे देश तक ग़ायब हो जाते हैं
इसमें कुसूरवार नक्शे नहीं
आँखे ठहराई जाती हैं

टिप्पणी

तफ़रीह की जगह नहीं है यह
नक्शों से फ़ौरन बाहर निकल आइए
मुझे लगता है एक दिन
सारे नक्शों को मोड़कर जेब में रख
लेगा कोई मसख़रा
और चलता बनेगा।

और न ही नक्शे के योजनाकारों को। बल्कि दोषी उन लोगों को माना जाता है जो उस नक्शे को देखते हैं या उसमें शामिल होना चाहते हैं।

विश्व की तमाम योजनाएँ एवं देश की विभिन्न सरकारी योजनाएँ इसके जीते-जागते उदाहरण हैं, जहाँ योजनाओं में शामिल नहीं होने की सारी ज़िम्मेदारी आम नागरिकों पर ही डाल दी जाती है। इसीलिए कवि कहता है कि जितनी जल्दी हो सके इन नक्शों से बाहर निकल आइए। यह कोई आनंद या घूमने-फिरने की जगह नहीं है। पता नहीं इन नक्शों की योजनाएँ किस उद्देश्य से बनाई गई हो। कवि आशंका व्यक्त करता है कि न जाने इन नक्शों के पीछे कौन-कौन से षडयंत्र हों। या फिर कोई सोची-समझी रणनीति से हमें मूर्ख ही बना रहा हो। कवि को लगता है कि एक दिन कोई परिहास करने वाला व्यक्ति सारे नक्शों को लेकर चलता बनेगा और हम ठगे-ठगे से देखते रह जाएँगे। नक्शे की राजनीति करने वाले व्यक्ति हमारे वश में नहीं है, किन्तु हम तो अपने-आपको इन योजनाओं और नक्शों से बाहर कर सकते हैं। इसीलिए कवि कविता के अंत में तमाम लोगों से अपील करता है कि नक्शों से फौरन बाहर निकल आइए। प्रकृति और मानवीयता के हित में यही है कि मनुष्य नक्शे में शामिल होने की इस अंधी दौड़ से बाहर निकल आए।

टिप्पणी

(1) 'नक्शे' कविता दो स्तरों पर चलती है। पहली 'नक्शे' और मानचित्र के संदर्भ में। यहाँ 'नक्शा', 'पैमाना' आदि जैसे शब्दों का मूल अर्थ के अलावा प्रतीकात्मक अर्थविस्तार भी है।

(2) नक्शा इस पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा तैयार की गई उन तमाम योजनाओं का प्रतीक है जिसमें आम लोगों और देशों को शामिल होने के लिए मज़बूर किया जाता है। जिसमें व्यक्ति, प्रकृति, संवेदना और मानवीयता के लिए कोई जगह नहीं है। जहाँ हर चीज़ वस्तु और उत्पाद की तरह देखी जाती है। जहाँ गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा, व्यावसायिकता और मुनाफ़ाखोरी ही उद्देश्य है। जहाँ शक्तिशाली राष्ट्र और लोग ही तय करते हैं 'पैमाना'। 'पैमाना' अर्थात् आधार। वे जब चाहें पैमाने को छोटा या बड़ा कर किसी को नक्शे में शामिल कर सकते हैं तो किसी को नक्शे से गायब।

(3) नरेश सक्सेना मानवीयता के प्रबल पक्षधर हैं। मनुष्य अपने जिन गुणों के कारण मनुष्य कहलाता है, उसके खोते चले जाने की चिंता इस कविता में अभिव्यक्त हुई है; जैसे- बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी का नक्शे में समा जाना। इसका आशय स्वाद की विविधता के खत्म हो जाने से है। इस वैश्वीकृत व्यवस्था में छोटी-छोटी चीज़ों का कोई महत्व नहीं रह गया है और बाज़ार सबको एक जैसा बना डालना चाहता है। मनुष्य ही वह प्राणी है जो अपनी परंपरा, संस्कृति और स्मृति को सहेज कर रखना चाहता है। वल्दियत और चोटों के निशान इसी ओर इशारा करते हैं। नक्शे के इस विराट रूप के समक्ष हमारे स्वप्न, स्मृति, परंपरा और संस्कृति सब कुछ खतरे में है। इसलिए कवि चाहता है कि जितनी जल्दी संभव हो इस नक्शे से बाहर निकल जाया जाए। यही मनुष्यता के हित में है।

(4) इस कविता में पर्यावरण की चिंता भी गंभीर रूप से अभिव्यक्त हुई है। कहते हैं कि महान वैज्ञानिक गैलीलियो प्रकृति को पुस्तक की तरह देखा करते थे। नरेश सक्सेना का बाल्यकाल भी स्वच्छ और स्वच्छंद प्रकृति की गोद में ही बीता था। उनकी कविताओं को पढ़ने से ऐसा लगता है कि प्रकृति ही उनकी सबसे बड़ी गुरु है। इसीलिए विज्ञान के सारे सिद्धांतों को भी वे प्रकृति में ही ढूँढ़ते हैं। प्रकृति की चिंता भी वे किसी प्रिय और आत्मीय जन की तरह करते हैं। पेड़, पानी, पत्थर, नदियाँ आदि की चिंताएँ कविता में यूँ ही अभिव्यक्त नहीं हुए हैं।

क्रियाकलाप 8.4

अब आप कविता को पढ़ और समझ चुके हैं। फिर भी कविता में कुछ शब्द ऐसे ज़रूर होंगे जो पूरी तरह आपकी समझ में नहीं आ रहे होंगे। ऐसे शब्दों को आप अपरिचित शब्द कह सकते हैं। परंतु एक बार इन शब्दों के साथ मित्रता स्थापित हो जाने के बाद ये आजीवन एक अच्छे मित्र की तरह आपका साथ निभाएँगे। तो कविता से ऐसे अपरिचित शब्दों को छाँटकर नीचे दिए गए बॉक्स में लिखिए :

अपरिचित शब्द	संभावित अथवा अनुमानित अर्थ
(1)	
(2)	
(3)	
(4)	
(5)	
(6)	
(7)	

अब अपरिचित शब्दों को ध्यान में रखते हुए एक बार और कविता को पढ़िए। इन शब्दों के ऊपर और नीचे के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाइए। शब्दों के अनुमानित अर्थ को बॉक्स में शब्दों के सामने लिखिए।

8.6 शिल्प-सौंदर्य

1. 'नक्शे' आधुनिक काल में लिखी जा रही छंदमुक्त कविताओं का एक उदाहरण है। 'नक्शे' कविता में न तो छंद है और न ही तुकबंदी। तो फिर सवाल उठता है कि यह कविता कैसे है? गद्य से किस प्रकार भिन्न है? आधुनिक कविताएँ छंदविहीन होते हुए भी आंतरिक लय के कारण कविता होती हैं। 'नक्शे' कविता भी आंतरिक लय के

कारण ही कविता है। यह लय बनती है कविता में मौजूद भावार्थ एवं शब्दों के उपयुक्त स्थान पर प्रयोग से। उदाहरण के लिए कविता की दो पंक्तियाँ लीजिए–

पैमाना घटाते ही
बौने हो जाते हैं पहाड़

इसे गद्य रूप में कुछ यों लिखा जा सकता है– ''पहाड़ पैमाना घटाते ही बौने हो जाते हैं।'' इन गद्य-पंक्तियों में कोई लय नहीं है, क्योंकि यहाँ व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रम का पालन किया गया है। इसके विपरीत कविता की पंक्तियों में शब्दों के उचित प्रयोग के कारण एक आंतरिक लय है जिसे आप भाव के अनुसार पढ़ते हुए भी महसूस कर सकते हैं। इसीलिए आधुनिक काल की कविताओं में उतार-चढ़ाव रखना होता है क्योंकि यहाँ रुकने और आगे बढ़ने के लिए छंद की तरह तय नियम नहीं होते हैं।

2. कविता पढ़ते हुए आपने ध्यान दिया होगा कि पूरी कविता में विराम-चिह्नों का उपयोग नहीं के बराबर किया गया है। पहला विराम ''भाई साहब'' के पश्चात संवाद को स्पष्ट करने के लिए आया है तो दूसरा कविता के अंत में। यह सिर्फ़ 'नक्शे' कविता की ही बात नहीं है। छंद मुक्त आधुनिक कविताओं में गद्य के विपरीत विराम-चिह्नों का उपयोग अल्प ही मिलता है। ऐसे में कविता वाचन के दौरान कहाँ रुकना है, कहाँ आगे बढ़ना है या कि कहाँ सुर को ऊपर की ओर ले जाना है- तय करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए कविता के भाव को ध्यान में रखकर ही ऐसी कविताओं का उपयुक्त आरोह-अवरोह के साथ पाठ किया जा सकता है। आधुनिक कविता और गद्य की भिन्नता को आप इन बिन्दुओं को भी ध्यान में रखते हुए समझ सकते हैं। आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि गद्य की तरह आधुनिक कविताएँ निरंतरता में नहीं लिखी जातीं। छोटे-छोटे वाक्य, भाव और लय को ध्यान में रखते हुए एक खास क्रम में एक दूसरे के नीचे रखे जाते हैं। लिखने के इस तरीके और कारण को पहचानने की कोशिश कीजिए। उदाहरण के लिए कविता की शुरू की छः पंक्तियों को ध्यान से देखिए कि उन्हें किस क्रम में एक-दूसरे के नीचे रखा गया है। यह भी समझने की कोशिश कीजिए कि गद्य-लेखन से यह किस प्रकार भिन्न है।

3. पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि नरेश सक्सेना बोलचाल की भाषा के कवि हैं। इसीलिए वे खुद भी मानते हैं कि उनकी कविताओं को आमतौर पर व्याख्या की ज़रूरत नहीं होती है। उनकी भाषा सरल, सहज एवं बोलचाल के करीब है। उर्दू के शब्द भी जगह-जगह मिल जाते हैं; जैसे– 'नक्शा', 'पैमाना', 'तफरीह' मसखरा आदि। इसके अलावा उनकी कविताओं में वैज्ञानिक शब्दावलियों का भी उपयोग दिखाई पड़ता है।

4. आधुनिक कविता में अभिव्यक्ति के महत्वूपर्ण तौर-तरीकों में से एक है- प्रतीक। इस कविता में भी प्रतीकों का सार्थक उपयेग किया गया है। यहाँ 'नक्शा' और 'पैमाना'

टिप्पणी

अपने मूल अर्थ के अलावा अन्य अर्थों की ओर भी संकेत कर रहा है। कविता में आए प्रतीकों और उनसे जुड़े भावों का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है। इन प्रतीकों को ध्यान में रखते हुए पुन: कविता के भाव का विस्तार करें।

5. कविता में एक खास तरह की नाटकीयता भी है। प्रारंभ में शांति, सहजता और गंभीरता, फिर एक बदहवासी एवं अंत में एक भय और सावधान सलाह- नाटकीयता को उभारते हैं। नाटकीय बनाने के लिए जगह-जगह नाटक की ही तरह संवाद का भी उपयोग किया गया है। जैसे–

    ''भाई साहब,

    कहीं हम नक्शों से बाहर तो नहीं छूट जाएँगे।''

    या फिर–

    'हमें तो अब यहीं अच्छा लगता है।'

6. पदार्थों एवं प्रकृति का भी जीवंत चित्रण किया गया है। इसीलिए नदियाँ मनुष्य की तरह बोल पड़ती हैं।

8.7 कुछ और कविताएँ/स्वयं पढ़ें/पाठ से आगे/कविता से आगे

आपने जाना और समझा कि पर्यावरण और प्रकृति के प्रति अतिरिक्त सजगता और चिंता के कारण ही नरेश सक्सेना को हरित कवि एवं उनकी कविता को हरित कविता तक कहा गया है। इसीलिए आधुनिक कवि विष्णु खरे उनके बारे में लिखते हैं- ''हिन्दी कविता में पर्यावरण को लेकर इतनी सजगता और स्नेह बहुत कम कवियों के पास है।'' नरेश सक्सेना की कविताओं की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। इंजीनियरिंग पेशे और विज्ञान का दखल उनकी कविताओं में लगातार बना रहता है। आप चाहें तो उन्हें वैज्ञानिक कवि भी कह सकते हैं। नरेश सक्सेना की कविताएँ पूँजीवादी व्यवस्था एवं बाज़ारवाद के कारण पैदा हुई अमावनीय परिस्थितियों के प्रति भी गंभीर चिंता अभिव्यक्त करती हैं। आइए, उनकी इन प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं में से एक को पढ़ते हैं–

एक वृक्ष भी बचा रहे

अंतिम समय जब कोई नहीं जाएगा साथ
एक वृक्ष जाएगा
अपनी गौरैयों-गिलहरियों से बिछुड़कर
साथ जाएगा एक वृक्ष
अग्नि में प्रवेश करेगा वहीं मुझसे पहले
'कितनी लकड़ी लगेगी'
श्मशान की टालवाला पूछेगा
गरीब से गरीब भी सात मन तो लेता ही है
लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में

कि बिजली के दाहघर में हो मेरा संस्कार
ताकि मेरे बाद
एक बेटे और बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।

8.8 आपने क्या सीखा

- संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं या टूट चुके हैं और उसकी जगह एकल परिवार बन रहे हैं। संयुक्त परिवार के टूटने से हमारे सामाजिक संबंधों को अपूरणीय क्षति पहुँची है।
- उपभोक्तावाद और पूँजीवादी जीवनमूल्य हमारी भारतीय परंपरा के लिए विनाशकारी साबित हुए हैं।
- 'अतिथि देवो भव' की हमारी परंपरा एकल परिवार और व्यक्तिवाद के कारण नष्ट होती जा रही है। हमारी भारतीय परंपरा जीवनमूल्यों को सिखाती है। हमें उन्हें जानना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।
- 'नक्शे' कविता में चित्रित किया गया है कि नक्शे में क्या है और क्या नहीं है। साथ ही नक्शे के स्वरूप और वर्तमान स्थिति की अभिव्यक्ति है।
- मनुष्य को नक्शे में शामिल होने की अंधी दौड़ से बाहर आना चाहिए।

8.9 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- अपने साथियों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न विषयों के आपसी संबंधों की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के द्वारा व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न अवसरों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं; जैसे-विचार-विमर्श, वैचारिक लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

8.10 योग्यता विस्तार

(क) राजेश जोशी

'संयुक्त परिवार' कविता के लेखक राजेश जोशी का जन्म 18 जुलाई, 1946 को नरसिंहगढ़ (मध्यप्रदेश) में हुआ था। उन्होंने प्राणिशास्त्र में एम.एस.सी. और समाजशास्त्र में एम.ए. की पढ़ाई की है। उन्होंने कुछ दिनों तक विद्यालय में अध्यापक की नौकरी की और बाद में बैंक की नौकरी करते हुए अवकाश लिया। राजेश जोशी की अनेक कविताओं का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

उनके प्रकाशित कविता-संग्रह हैं : समर गाथा (1977), एक दिन बोलेंगे पेड़ (1980), मिट्टी का चेहरा (1985), नेपथ्य में हँसी (1994), दो पंक्तियों के बीच (2000), चाँद की वर्तनी (2006), गेंद निराली मीठू की (1989)। इनके कुछ कहानी-संग्रह जैसे सोमवार और अन्य कहानियाँ (1982), कपिल का पेड़ (2001) और कई नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें कई पुरस्कार भी मिले हैं; जैसे – साहित्य अकादमी पुरस्कार (2002), शमशेर सम्मान (1996), मुक्तिबोध पुरस्कार (1978), माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार (1985) आदि।

(ख) नरेश सक्सेना

नरेश सक्सेना का जन्म 16 जनवरी, 1939 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ। पिता की नौकरी के कारण इनका बचपन जंगलो में नदियों के किनारे बीता। प्रकृति की स्वच्छंदता और उन्मुक्तता का यही अनुभव उनकी कविताओं में पर्यावरण की चिंता के प्रति अभिव्यक्त होता है। विज्ञान की पृष्ठभूमि से होने के कारण वे प्रकृति में विज्ञान एवं विज्ञान में प्रकृति ढूंढ़ते हैं। कुल मिलाकर नरेश सक्सेना की कविताओं के मूल में पर्यावरण की चिंता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं इंजीनयरिंग पेशे का अनुभव मौजूद है। इसीलिए कुछ आलोचकों ने उन्हें 'हरित कवि' एवं 'वैज्ञानिक कवि' जैसे नामकरणों से भी विभूषित किया है।

इन सारी विशेषताओं के साथ-साथ मानवीयता के प्रति अगाध-प्रेम से इनकी कविताएँ परिपूरित हैं। इसीलिए सिर्फ राष्ट्र ही नहीं, वैश्विक चिंताएँ भी इनकी कविताओं में अभिव्यक्ति पाती हैं। सामान्यत: इनकी कविताओं की भाषा बोलचाल की भाषा है। विज्ञान की पृष्ठभूमि से होने के कारण इनकी दृष्टि तार्किक एवं खोजपरक है। नरेश सक्सेना ने कम किंतु सार्थक कविताएँ लिखी हैं।

अब तक उनके दो कविता-संग्रह–'समुद्र पर हो रही है बारिश' एवं 'सुनो चारुशीला' प्रकाशित हो चुके हैं। हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। उनके द्वारा लिखा गया नाटक 'आदमी का आ' देश की कई भाषाओं में पाँच हजार से ज्यादा बार प्रदर्शित हो चुका है। फिल्म निर्देशन के लिए भी उन्हें 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। साहित्य के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए उन्हें कबीर सम्मान (2017), पहल सम्मान (2000), भवभूति सम्मान, मीरा स्मृति सम्मान, कविता कोश

सम्मान, जनकवि नागार्जुन स्मृति सम्मान (2018) आदि अनेक प्रसिद्ध साहित्यिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

8.11 पाठांत प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

1. संयुक्त परिवार से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. संयुक्त परिवार क्यों टूट रहे हैं? अपने विचार लिखिए।
3. संयुक्त परिवार में संबंधों की क्या अहमियत होती है? स्पष्ट कीजिए।
4. 'ताले में खुसी पर्ची' से क्या आशय है? प्रस्तुत कीजिए।
5. कविता का मूल संदेश क्या है? उल्लेख कीजिए।
6. संयुक्त परिवार और एकल परिवार में तुलना करते हुए स्पष्ट कीजिए की दोनों में कौन उत्तम है? तर्क सहित उत्तर दीजिए?
7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   टूटने की इस प्रक्रिया में क्या क्या टूटा है

   कोई नहीं सोचता
8. 'नक्शे' कविता का मुख्य विषयवस्तु क्या है? संक्षेप में उल्लेख करें।
9. 'नक्शे' कविता में कवि का कहना है कि 'हम सब एक नक्शे में रहते है'। क्या आप कवि के इस विचार से सहमत हैं? पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए।
10. 'नक्शे' कविता के आधार पर नक्शे में जो हैं और जो नहीं हैं उनकी एक सूची निम्न प्रारूप में तैयार कीजिए।

नक्शे में जो है	जो नहीं है
....	....
....	....
....	....

11. कवि ने ऐसा क्यों लिखा है कि नदियों को अब नक्शे में रहना ही अच्छा लगता है?
12. कवि को ऐसा क्यों लगता है कि एक दिन कोई मसखरा सारे नक्शों को मोड़कर जेब में रख लेगा और चलता बनेगा?
13. कविता के आधार पर लिखिए कि हर कोई नक्शे में शामिल होने के लिए क्यों परेशान है?

14. कविता में नक्शे के बजाए आँखों को कुसूरवार ठहराने से कवि का क्या आशय है?
15. नरेश सक्सेना की कविताओं की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
16. इस कविता की शिल्पगत विशेषताओं का बिन्दुवार उल्लेख कीजिए।

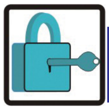

8.12 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 8.1

1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

8.1 1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग)

8.2 क. ग़लत ख. सही ग. ग़लत घ. ग़लत ङ. सही

8.3 1. (क) 2. (घ)